उत्तराखण्ड में कौशल विकास : चुनौतियाँ एवं संभावनाएं

अभिताम भट्ट

सारांश

भारत एक सर्वाधिक युवा आबादी वाला राष्ट्र है जो अपनी श्रमशील शक्ति के बल पर विश्व को नेतृत्व प्रदान करने का सामर्थ्य रखता है। आधुनिक वैश्वीकरण के युग में स्वचालन व कृत्रिम बुद्धिमत्ता के परिणास्वरूप बेरोजगारी एवं गरीबी का जो गम्भीर संकट उत्पन्न हुआ है तथा उसे कोविड-19 विश्वव्यापी महामारी ने जिस प्रकार विकटता प्रदान की है, उसने भारत में कौशल विकास की अनिवार्यता को बिल्कुल स्पष्ट कर दिया है। प्रस्तुत शोध-पत्र उदारीकरण, वैश्वीकरण एवं कोविड-19 महामारी के व्यापक परिप्रेक्ष्य में तथा उत्तराखण्ड के संदर्भ में भारत में कौशल विकास की चुनौतियों और संभावनाओं की पड़ताल का एक प्रयास है। इसके अनतर्गत कौशल विकास के प्रति केन्द्र व राज्य सरकार की प्रतिबद्धता एवं इस दिशा में किये जा रहे विभिन्न सरकारी प्रयासों एवं उपक्रमों का मूल्यांकन भी किया गया है तथा यह अधययन उत्तर कोविड-19 काल में देश में कौशल विकास की प्रक्रिया मे तीव्र विकास की सम्भावनाओं को भी दर्शाने का प्रयास करता है।

संकेत शब्द - वैश्विक, कौशल, सॉफ्ट स्किल, हार्ड स्किल, एन0पी0एस0डी0

भूमिका

कोविड-19 (COVID-19) महामारी के विश्वव्यापी संकट ने बेरोजगारी की जिस भयावह समस्या को उत्पन्न किया है, उसने राजनीति के अधयेताओं एवं विश्लेषकों को भारत में कौशल (Skill Development) के विमर्श पर चिंतन एवं मनन के लिए उत्प्रेरित किया है। आधुनिक वैश्वीकरण के युग में जहाँ हर जगह तकनीकी एवं व्यावसायिक कौशल की माँग बढ़ती जा रही है, जहाँ हर जगह यंत्रें एवं मशीनों की तूती बोल रही हो, वहाँ भारत जैसा सबसे अधिक युवा आबादी वाला राष्ट्र किस प्रकार अपनी युवा आबादी को कौशल विकास की प्रक्रिया से जोड़ पा रहा है, यह मौजूदा समय में अध्ययन एवं विश्लेषण का केन्द्र बन गया है। किसी भी राष्ट्र की प्रगति तभी सुनिश्चित हो सकती है जब उसकी आबादी व्यावसायिक और पेशेवर दृष्टि से अधिक कुशल, दक्ष और प्रशिक्षित हो। आधुनिक

* शोधार्थी, बी.एस.एम.पी.जी.कॉलेज, रूड़की (हरिद्वार), उत्तराखण्ड